कवि डॉ. बृजेश सिंह की ग़ज़लों में अस्मितामूलक विमर्श

प्रा.रविंद्र पुंजाराम ठाकरे
(शोध छात्र) ई-मेल – ravipthakare@gmail.com
मोबाईल नं.: 9822916518

प्रो.डॉ.अनिता पोपटराव नेरे
शोध निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष
म.स.गा.महाविद्यालय,मालेगाँव-कैम्प, तह.मालेगांव, जि.नासिक

प्रास्ताविक :-भारतीय समाज व्यवस्था सदियों से वर्ग और वर्ण विभाजन पर आधारित है । यहाँ अमीरी-गरीबी की खाई अजीब है । भारत अमीर लोगों का गरीब और तिरस्कृत लोगों का सुसंस्कृत देश है । यहाँ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक विषमता शीर्षस्थ है । इसी कारण मुख्य प्रवाह से पीछे छुटा हुआ जो समाज है, वह अपनी अस्मिता और अस्तित्व बरकरार रखने के लिए संघर्षरत दिखाई देता है। तथाकथित व्यवस्था की प्रताड़ना को ललकारते लोग ‘अस्मितामूलक’ कहलाते हैं । भारत में अस्मितामूलक समाज की तादात सबसे अधिक है । यह समाज गाँव, नगरों के बाहर सड़ी-गली, बदबूदार बस्तियों में अपना जीवन बसर करने को विवश है । इनके घरों में किसी प्रकार की सुख-सुविधाएँ, आरोग्य या शिक्षा का कोई ठोस प्रबंध नहीं है । गंदीनाली, संकीर्ण गलियाँ, अशिक्षा, अंधश्रध्दा, अपमान, घृणा और अमानवीयता इनके जीवन का प्रमुख हिस्सा है । यह समाज तथाकथित व्यवस्था का शिकार है । फिर भी यह वर्ग अपनी अस्मिता को बनाये रखने के लिए संघर्ष करते नजर आते हैI यही इनकी अस्मिता है। भारत जैसे 'विश्वगुरु' कहे जानेवाले देश में मानव की मानव के प्रति उपेक्षा और घृणा का भाव, भारतीय समाज को उन्नति की नहीं अवनति की ओर ले जानेवाला है । यह चिंताजनक है l

विषय प्रवेश :

‘ग़ज़ल’ हिंदी साहित्य की सशक्त विधा है । उसमें भावभिव्यक्ति का ओज विद्यमान है । वह आम आदमी के दुःख दर्द, संघर्ष और जिंजीविशा को बयान करने में समर्थ है । दुष्यंत के बाद अन्य हिंदी ग़ज़लकारों ने प्रतिभा, अनुभूति और अभिव्यक्ति के दम पर ग़ज़ल को विविधता और विराटता से जोड़ा है । इस परंपरा का निर्वाह करने में कवि डॉ.बृजेश सिंह की ग़ज़लें सार्थक सिद्ध हुई है । कवि डॉ.बृजेश सिंह हिंदी ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर है । उनका ग़ज़ल साहित्य भारतीय समाज व्यवस्था के दोगलेपन को बेनकाब करता है । मानव का मानव के प्रति उपेक्षा भाव कवि को निरंतर खलता है । हिंदी के वरिष्ठ आलोचक डॉ. विनय कुमार पाठक लिखते हैं, "वर्तमान हिंदी ग़ज़लकारों में एक प्रमुख नाम डॉ. बृजेश सिंह का है, जिन्होंने अल्प अंतराल में ही ग़ज़ल के क्षेत्र में अपनी बुलंदी का परचम लहरा दिया है । आपकी ग़ज़लें देश व समाज के प्राय: सभी विषयों को छुते हुए न केवल समस्याओं को सामने लाती हैं अपितु समुचित समाधान भी सुझाती हैं ।"(1)

कवि डॉ.बृजेश सिंह का ग़ज़ल साहित्य वर्तमान अस्मितामूलक विमर्श का इस्पाती दस्तावेज है । अपनी ग़ज़लों के माध्यम से कवि ने अस्मितामूलक समाज के दर्द को वाणी प्रदान की है और तथाकथित विषम व्यवस्था पर करारा व्यंग्य भी किया है । अस्मितामूलक समाज को ढ़ोते लोग अपने ही देश में अनजान हो गए हैं । तथाकथित समाज उनके प्रति तिरस्कार, हीनता और ज़हालत भरी दृष्टि से देखता हैं और भाईचारा, एकता तथा समानता की बात करता है, ऐसी दोगली एवं सफेदपोश व्यवस्था की दहशतगर्दी से कवि खीज उठते हैं,

"अपने ही वतन से बेदखल हो चले जाने कब से लोग ।
बेबस सुनते भाई-चारे की बातें वहसी मेहमानों से ।।
न जीते चैन से न जीने देते हमें चैन से 'बृजेश' ।
जाने कब पीछा छुटेगा दहशतगर्द वहशी शैतानों से ।"(2)

भारत में सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक सभी दृष्टियों से स्तर भेद हैं। अस्मितामूलक समाज का जीवन यातनामय जीने का मुख्य कारण आर्थिक विपन्नता ही है । इसीलिए इन लोगों के हिस्से में अपमान और उपेक्षा आयी है। गरीबी के कारण इस वर्ग को अशिक्षा, अंधश्रध्दा, अन्याय, अपमान का शिकार होना पड़ा है । कवि भारतीय समाज में व्याप्त अमीरी-गरीबी की खाई को चित्रित करते हुए लिखते हैं, -

"ग़रीबी में अपने करीबी भी अपने कहाँ होते ।
पानी उतारने के लिए सभी तैयार हो गये ।
गरीब होना यकीन मानों सबसे बड़ा अपराध ।
बेगुनाह होते आरोपों के बौछार हो गये ।।
'बृजेश' गरीबों के न्याय की कौन सोचता ।
जब दौलत वाले न्याय के खरीददार हो गये ।।"(3)

अस्मितामूलक समाज के प्रति सरकार का रवैया भी दोयम है । इनके उद्धार के खातीर कई नयी-नयी योजनाओं की घोषणाएँ सरकार करती है । किन्तु सरकार इस वर्ग को मुख्य प्रवाह में लाने की बात नहीं करती । इस वर्ग तक योजनाएँ आते-आते सुख जाती है । प्रत्यक्ष लाभार्थी वंचित रहकर बाबू लोग ही इन योजनाओं से निहाल हो जाते हैं। कवि इस व्यवस्था को बेपर्दा करते हुए लिखते हैं, -

"छोटी-मोटी वसूली खातिर खूंखार हो गये ।
बड़े कर्जदारों के लिए बैंक वाले उदार हो गये ।।
हजारों लाखों के कर्ज पर कहर बरप गये मगर ।
करोड़ो दबाने वाले सम्मानित कर्जदार हो गये ।।"(4)

जल,जंगल और जमीन से जुड़े आदिवासियों की स्थिति भारतीय व्यवस्था में और भी भयावह है । उनकी जमीनों को हड़पकर उन्हें बे-घर किया जा रहा है । उनके पास तन ढ़कने के लिए भी कपड़ा नहीं है । ये लोग तथाकथित व्यवस्था का विरोध करते हैं तो उन्हें देशद्रोही करार दे दिया जाता है । उनकी जमीने हड़प कर उन्हें भूमिहीन किया जा रहा है । कवि डॉ.बृजेश सिंह आदिवासियों की अस्मिता को अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं, -

"वनवासियों को ठगकर बड़े मालदार हो गये ।
नक्सल पनपने के ये ही जिम्मेदार हो गये ।।
सीधे-सादे वनवासी आज भी लंगोटी में ।
नमक बदले चिरौंजी वाले साहूकार हो गये ।।
शोषण से मुक्ति दिलाने का नाम गुलाम बनाना ।
कैसे-कैसे अवाम के खिदमतगार हो गये ।।"(5)

यह विड़बना है कि, अस्मितामूलक वर्ग का शोषण करने वाले ही महिमामंडित हो रहे हैं । वे ही मान-सम्मान के अधिकारी बन बैठे हैं । वे ही धर्म रक्षक और मानवता का परचम लेकर घुम रहे हैं । भाईचारा, एकता और समानता का ठेका लेकर घुमनेवाले ही मानव-मानव में भेद कर रहे हैं । शांति के मसिहा बनकर घुमनेवालों के ही हाथ खून से रंगे हुए हैं । इन तथाकथित समाज के ठेकेदारों के कारण ही अस्मिता मूलक समाज अवर्णनीय यातनाएँ भोग रहा है। कवि का मानना है,कि अगर भरत में एकता बरकरार रखनी है? विश्व के सामने भारत का आदर्श खड़ा करना है? विश्व में भारत को महासत्ता बनाना है,? तो हमें

सबको साथ लेकर चलना होगा। विकास केवल बोलने, दिखावे के लिए नहीं बल्कि अस्मिता मूलक समाज को साथ लेकर करना होगा। क्योंकि अस्मिता मूलक जीवन भारतीय व्यवस्था की देन है।

आधुनिक काल नारी मुक्ति का काल है। नारी एक शक्ति नहीं एक व्यक्तित्व के रूप में उभरकर सामने आयी है। वह अपना अस्तित्व निर्माण कर पुरुष से कंधा मिलाकर चल रही है। अपने आत्मविश्वास और विवेक के बल पर नारी वर्तमान युग में सभी क्षेत्रों में अपना हुनर दिखा रही है। ग़ज़ल के क्षेत्र में डॉ. बृजेश सिंह अपना मानक कीर्तिमान स्थापित कर चुके हैं। उनकी ग़ज़लों में समाज, धर्म,साहित्य, संस्कृति, पर्यावरण,राष्ट्रीय चेतना,राजनीति,अहिंसा, तंत्र-विज्ञान,किसान, दलित जीवन, आदिवासी, वृद्ध, अल्पसंख्यांक, किन्नर,बालको की दयनीय स्थिति एवं नारी की महिमा आदि विविध विषयों को मौलिक रूप में रेखांकित किया गया है। नारी के बिना परिवार की दरावस्था कवि अपनी ग़ज़लों में चित्रित करते हैं। ग़ज़ल को कवि डॉ. बृजेश सिंह ने नारी के संघर्ष, आत्मसम्मान एवं गौरव का साधन बनाया है। उनकी ग़ज़लें हुस्न और इश्क तथा प्रेमी और प्रेमिका के मधुर वार्तालाप तक सीमित न रहकर नारी की अस्मिता को उजागर करती है-

"हमसफर बिन बहुत कठिन जीवन का सफर होता है।
किसी -किसी की किस्मत जुदाई का जहर होता है।।
देखते -देखते लूट जाती है किसी की दुनिया।
आदमी पे बरपा कभी कुदरत का कहर होता है।।
राह बीच ही अनायास साथ छूट जाता हमसफर का।
'बृजेश' कभी इस कदर खफा मुकद्दर होता है।।"[6]

कवि डॉ.बृजेश सिंह की ग़ज़लों में वृद्ध विमर्श का मार्मिक अंकन हुआ है। कवि माता-पिता और वृद्ध हमारी संस्कृति के कलश हैं। माता- पिता हमारी जड़े हैं। जिस माता-पिता ने जीवन भर कठिन परिश्रम करके हमें संभाला उन्हें ही हम बेसहारा वृद्ध आश्रमों में छोड़ आना अनुचित नहीं है। मुह से अनर्थ बातें निकल आती हैं, वे बच्चों जैसी हरकतें करने लग जाते हैं। परंतु इस व्यवहार में उनका कोई कसूर नहीं होता है। कवि यांत्रिक उन्नति की अंधी दौड़ में मस्त, निष्ठुर और गैरजिम्मेदार युवा पीढ़ी को फटकारते हुए वृद्ध विमर्श पर इस प्रकार विचार व्यक्त करते हैं-

"बुजुर्ग का दिन काटना जैसे भी मन बहलाना है I
अक्सर नाती पोतों से गहरा हो जाता याराना है II
बालपन से बुढ़ापे की यात्रा कुछ लम्बी मगर I
बुढ़ापे से सीधे ही बचपने में जाना है II
एक तरफ जीवन का गहन अनुभव बाँटना I
दूसरी तरफ बात बेबात में चिडचिडाना है II" [7]

कवि डॉ.बृजेश सिंह को लोकतंत्र में अटूट विश्वास है। समता,एकता और सबका विकास कवि के ग़ज़लों की विशिष्टता है I भारत में विकलांगों की स्थिति दयनीय है l प्रकृति और विज्ञान के प्रकोप के कारण कई लोगों को विकलांग जीवन व्यतीत करना पड रहा हैl विकलांग अपनी अस्मिता जीवित रखकर जीवन संघर्ष को साकार कर रहे हैं-

तन विकलांग है तो क्या मन को फौलाद बनाने से I
कामयाबी कदम चूमती मायूसी मुख मोड़ लेती है ll
विकलांगता को अभिशाप मान कभी घबराना न साथी l
इरादा बुलंद तो दूर की मंजिल भी नाता जोड़ लेती है ll
तन की कमियों से घबरा मायूस न होना 'बृजेश' l
मायूसी आदमी की हिम्मत सारी निचोड़ लेती हैII" [8]

कवि डॉ. बृजेश सिंह जन चेतना के चितेरे कवि हैं। उनकी ग़ज़लों में किसान जीवन की वास्तविकता को मार्मिक रूप में रेखांकित किया गया है। वर्तमान बाजारवादी व्यवस्था का यथार्थ किसानों की त्रासदी है ,इसका मौलिक चित्रण कवि डॉ.बृजेश सिंह ने अपनी ग़ज़लों में किया है। वर्तमान समय में किसान जीवन काफी संघर्षमय और समस्याओं से घिरा है। कवि डॉ. बृजेश सिंह किसानों को आर्थिक दृष्टि से संपन्न करना चाहते हैं l इसके लिए रासायनिक खाद से बचने की सलाह देते हैं l वे किसानों को रासायनिक खाद और कीटनाशकों के दुष्परिणामों से सचेत करा कर जैविक खाद और प्राकृतिक प्रक्रिया का महत्व इस प्रकार बताते हैं-

"बहुत भटके न खुद को और भटकाना है।
खुद को प्राकृतिक खेती की ओर लौटाना है।।
रासायनिक उर्वरकों से हम चिपके हुए हैं।
उर्वरा शक्ति का न और सत्यानाश कराना है।।
रासायनिक खादों का कुप्रभाव हम देख चुके।
दिन-ब-दिन खेत का उपजाऊ पन घटाना है"।।[9]

निष्कर्ष : -

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहाँ जा सकता है कि, कवि डॉ. बृजेश सिंह का ग़ज़ल साहित्य अस्मितामूलक समाज की पीड़ा को अभिव्यक्त करने में समर्थ है। अस्मितामूलक समाज जहाँ अमानवीय यातनाएँ भोगकर जीवन यापन कर रहा है, वहीं वह आत्मसंघर्ष करता भी प्रतीत होता है। कवि ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से अस्मितामूलक समाज की चेतना को उजागर किया है। साथ ही तथाकथित समाज के ठेकेदारों, नेताओं की दोयम मानसिकता को बेनकाब करके भारतीय समाज में मानवता, एकता, समता और शांति की स्थापना की है। कवि बृजेश सिंह की ग़ज़लें मानवता की पक्षधर हैं तथा इनमें 'वसुदैव कुटुंबकम्' की भावना विद्यमान है।

****

संदर्भ :-

1. डॉ. सिंह बृजेश, 'हालात-ए-वतन' भूमिका से
2. डॉ. सिंह बृजेश, 'हकीकत', पृ.52
3. डॉ. सिंह बृजेश, 'हालात-ए-वतन', पृ.23
4. डॉ. सिंह बृजेश, 'हालात-ए-वतन', पृ.50
5. डॉ. सिंह बृजेश, 'हालात-ए-वतन', पृ.42
6. डॉ.सिंह बृजेश, 'हकीकत' ,पृ. 29
7. संपा.सिंह संदीप, 'विकास संस्कृति' (त्रे.मा.पत्रिका अक्टू-नवं-दिसं,2010) अंक.16,वर्ष-04,पृ .48
8. डॉ. सिंह बृजेश, 'हकीकत', पृ.57
9. संपा.सिंह संदीप,विकास संस्कृति, (त्रै.मा.पत्रिका ,अक्तूबर-नवम्बर-दिसंबर,2011)अंक -20,वर्ष-5, पृ.38